'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 | अंक 10 | 4 अगस्त, 2017 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

संगठित संघर्ष के समक्ष झुकी सरकार

आनन्दपाल प्रकरण में 23 दिनों के लंबे संघर्ष एवं तनावपूर्ण माहौल के बाद आखिर 18 जुलाई को राजस्थान सरकार के गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया, पंचायती राजमंत्री राजेन्द्रसिंह राठौड़, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष अशोक परनामी सहित पुलिस के बड़े अधिकारियों ने संघर्ष समिति के प्रतिनिधिमंडल के साथ बातचीत कर समिति की सभी सात मांगों को स्वीकार किया एवं बदले में संघर्ष समिति ने 22 जुलाई को अपना प्रस्तावित आंदोलन स्थिगित कर दिया। इस प्रकार किसी घटना विशेष या मुद्दे विशेष को लेकर समाज ने अनेक वर्षों के बाद सरकारी हठधर्मिता का संगठित विरोध किया एवं समाज की संगठित शक्ति के सामने सरकार को अपनी हठधर्मिता छोड़नी पड़ी। सरकार द्वारा इस प्रकरण को केन्द्रीय जांच एजेन्सी सी.बी.आई. को भेजने का अनुशंसा पत्र केन्द्र सरकार को प्रेषित करने की हामी भरी गई जो संघर्ष समिति की मुख्य मांग थी। अब वह पत्र भेजा भी जा चुका है। इस प्रकार तात्कालिक रूप से इस प्रकरण पर प्रारम्भ हुआ आंदोलन समाप्त हो गया। लेकिन समाज के दृष्टिकोण से हमें सोचना चाहिए कि इस आंदोलन में हमने क्या खोया एवं क्या पाया। दिखने में तो इस आंदोलन में हमारी जीत ही नजर आती है और जिस प्रकार से यह आंदोलन सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न बना था उस दृष्टिकोण से हमारी जीत ही है लेकिन फिर भी इस बात की समीक्षा आवश्यक है कि समाज को इस आंदोलन से क्या लाभ एवं हानि हुई, क्या सीख मिली जिसे भविष्य में ध्यान रखना आवश्यक है एवं समाज की संगठित शक्ति के लिए क्या-क्या सावधानियां अपेक्षित हैं। बिंदुवार समीक्षा करें तो निम्न बिन्दु निकल कर आते हैं :

1. अनुकरणीय एकता : जिस प्रकार से समाज के संगठनों ने इस प्रकरण में असाधारण एकता का परिचय दिया वह अनुकरणीय है। समाज के सभी संगठनों ने मिलकर संघर्ष समिति का गठन किया और प्रारम्भ से लेकर अंत तक पूरा आंदोलन जिस प्रकार से संघर्ष समिति के नेतृत्व में संगठित होकर किया उसने सरकार को झुकने को मजबूर किया लेकिन इस एकता के साथ-साथ बार-बार श्रेय लेने की कसमसाहट भी अनेक लोगों में दिखाई दी जिस पर विचार किया जाना आवश्यक है। हालांकि वरिष्ठ एवं समझदार लोगों ने कमान संभाले रखकर इस विकृति से आंदोलन को बचाए रखा लेकिन उन्हें अपनी शक्ति का एक बड़ा भाग तो इस विकृति को रोकने में ही लगाना पड़ा।

2. समाज की छवि पर प्रभाव : इस आंदोलन का समाज की छवि पर भी दो तरफा प्रभाव हुआ। एक तरफ जहां अन्याय एवं हठधर्मिता के विरुद्ध जुझारुपन ने समाज की शक्ति का अहसास करवाया वहीं एक अपराधी के प्रति सहानुभूति के आरोप ने समाज की छवि पर आघात भी किया। समाज के कुछ युवाओं द्वारा मृतक अपराधी को नायक की तरह पेश करना इसका मुख्य कारण रहा

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

आम सूचना

श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं श्री प्रताप फाउंडेशन समाज की सामूहिक चेतना के साथ है। समाज हित के हर आंदोलन में सक्रिय सहयोगी है। ऐसा ही अबी आनंदपाल प्रकरण में भी हुआ। संघ प्रमुख श्री के निर्देशानुसार संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक श्री महावीर सिंह सरवड़ी अपने सहयोगियों के साथ पूरे आंदोलन में संघर्ष समिति के सक्रिय सहयोगी रहे। यदि कोई व्यक्ति समाज की ऐसी सामूहिक चेतना का विरोध करता है तो उसके उस कृत्य का संघ से कोई संबंध नहीं है।

लक्ष्मणसिंह बैण्याकाबास
संचालन प्रमुख
श्री क्षत्रिय युवक संघ

क्षत्रिय सभा बीकानेर के चुनाव

23 जुलाई 2017 रविवार को श्री करणी राजपूत विश्राम गृह में क्षत्रिय सभा बीकानेर की आमसभा आयोजित की गई। आम सभा में सर्व सम्मति से सभा की पूर्व कार्यकारिणी को बर्खास्त कर नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें बजरंग सिंह रोयल को सभा का अध्यक्ष एवं करणप्रतापसिंह सिसोदिया को महामंत्री घोषित किया गया। अध्यक्ष बजरंगसिंह रोयल ने कर्नल अशोक सिंह चौहान टाटी को उपाध्यक्ष, भंवरसिंह उदट को उपमंत्री एवं रणवीरसिंह नोखड़ा को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया। इसके अलावा कर्नल हेमसिंह मण्ड्रेला, बबरुभानसिंह हाडला, जगमालसिंह पायली व जितेन्द्रसिंह आलसर को कार्यकारिणी सदस्य मनोनीत किया गया।

संचालन कार्यालय की बैठक संपन्न

जयपुर स्थित केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में 16 जुलाई को श्री क्षत्रिय युवक संघ के संचालन कर्यालय की बैठक संपन्न हुई जिसमें संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह सहित केन्द्रीय कार्यकारियों ने भाग लिया। बैठक में विगत माह के काम की रिपोर्ट की समीक्षा की गई एवं रिपोर्टिंग में आ रही समस्याओं के समाधान हेतु चर्चा की गई। पूर्व में गठित विभिन्न प्रकोष्ठों को सक्रिय करने हेतु विशेष चर्चा की गई। कर्मचारी प्रकोष्ठ के संयोजक का दायित्व बाड़मेर के पूर्व प्रांत प्रमुख कृष्णसिंह राणीगांव को सौंपा गया एवं उन्हें उनके सहयोगी नीयत कर कार्य प्रारम्भ करने का निर्देश दिया गया।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

'आईए समाज चरित्र मांगें'

अगस्त माह में भारतीय तिथिनुसार 6 अगस्त को एवं ग्रिगेरियन कलेण्डर अनुसार 13 अगस्त को हम सब समाज चरित्र के प्रतिरूप दुर्गादास जी की जयंती मनाने जा रहे हैं। उन दुर्गादास जी की जिनके लिए विश्वात्मा के दृष्टिकोण से काल की मांग के अतिरिक्त कुछ महत्त्वपूर्ण नहीं था। जिन्होंने सदैव स्वयं की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को वृहद आवश्यकताओं पर बलि चढ़ाया। मारवाड़ के शासक के लिए ओछे शब्दों का प्रयोग कर उन्हीं की शक्ति के नाम पर अन्याय करने वाले राईके को मारने से लेकर क्षिप्रा के तट पर महानिर्वाण तक उनका पूरा जीवन समाज चरित्र की पाठशाला है। जमरुद के थाने पर महाराजा जसवंतसिंह जी के देहावसान से

लेकर अजीतसिंह द्वारा मारवाड़ छोड़कर जाने के संदेश तक हर घटना इस बात की द्योतक है कि उन्होंने स्वयं की आवश्यकता और इच्छा की अपेक्षा समाज और राष्ट्र की आवश्यकता को महत्त्व दिया। ऐसे महापुरुष की जयंती पर हम सब उनसे आशीर्वाद की चाह रखते हैं।

➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

सर्वोच्च न्यायालय का आदेश लागू

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 6 अप्रेल 2017 को अपील संख्या 3609 दीपा बनाम भारतीय संघ के तहत दिए गए निर्णय के अनुसार आरक्षित वर्ग का कोई भी व्यक्ति यदि किसी परीक्षा में आरक्षण का लाभ यथा उम्र सीमा, शारीरिक क्षमता, अंक आदि ले लेता है और उसके सामान्य वर्ग के अभ्यर्थी से ज्यादा अंक आते हैं तो भी उसे सामान्य वर्ग में न मानकर उसी आरक्षित वर्ग में माना जाएगा। सामान्य वर्ग में उसे ही माना जाएगा जिसने उपरोक्त लाभ नहीं लिया है। राज्य सरकार ने 26 जुलाई 2017 को एक सर्कुलर जारी कर इस आदेश को राजस्थान में लागू कर दिया है। यह आदेश देश की आरक्षण व्यवस्था के लिए महत्त्वपूर्ण आदेश है। इससे सामान्य वर्ग के अभ्यर्थियों के अवसरों का आरक्षित वर्ग द्वारा अधिग्रहण नहीं हो पाएगा।

हमारे गांव हमारी जड़

राजपूत की पहचान उसके गांव से होती है। आजकल व्यवसाय, शिक्षा आदि आवश्यकताओं के कारण गांव छोड़कर शहरों में रहने वाले राजपूत परिवारों की नई पीढ़ी अपनी इस पहचान से अनभिज्ञ होती जा रही है। गांवों से कटना एक प्रकार से अपनी जड़ों से कटना है क्यों कि हमारी वंश वृक्ष की जड़ों की ओर जाने पर हमें ज्ञात होता है कि हमारे ही किसी पूर्वज ने उस गांव का रक्षण, पोषण किया है जिसे हम अपना गांव कहते हैं। ऐसे में हमारी जड़ों के प्रतीक उस गांव को जान सकें इसके लिए पथ प्रेरक के 20वें वर्ष के प्रवेश के साथ ही एक नया स्तंभ शुरू गया है - **'हमारे गांव-हमारी जड़।'** इसमें श्रृंखलाबद्ध रूप से प्रति अंक एक गांव का परिचय छापा जा रहा है। इस बार प्रस्तुत है बीकानेर जिले के आशापुरा गांव की कहानी।

गांव स्थित करणी माता मंदिर

विस्थापितों के पुरुषार्थ का प्रतीक : आशापुरा

बीकानेर जिले की पूंगल तहसील का गांव आशापुरा अपने स्वाभिमान के लिए 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय पाकिस्तान छोड़कर आए राजपूतों का गांव है। पाकिस्तान के छाछरो एवं अमरकोट तालका (जागीर) के राजपूत युद्ध के समय अपनी जमीन-जायदाद घर-मकान छोड़कर भारत आए तथा यहां बाड़मेर में विभिन्न शरणार्थी शिविरों में 10-12 वर्ष रहने के बाद फरवरी 1983 में इस गांव को बसाया।

इस गांव को बसाने में प्रतापसिंह का अहम् योगदान है। वे उस जमाने में पढ़े-लिखे लोगों में एक थे। जो पाक में सरकारी सेवा छोड़कर आए व यहां भी सरकारी सेवा का मोह त्याग समाज सेवा में लग गए। 1971 में पाकिस्तान से आए लोगों को भारतीय नागरिकता दिलवाने, मतदान अधिकार, राशन कार्ड, जमीन आवंटन जैसे कार्यों के लिए अधिकारियों एवं नेताओं के सम्पर्क में रह प्रयासरत रहे। यहां आशापुरा बसाने की आशा (इच्छा) पूरी होने के उपलक्ष्य में गांव का नाम आशापुरा रखा। गांव के नामकरण के पीछे एक तर्क यह भी है कि उनके पिताजी का नाम आशकरण सिंह था अतः गांव का नाम आशापुरा रखा गया। नए गांव की मूलभूत सुविधाओं पानी, सड़क, स्कूल, सिंचाई, खाले, जमीन-आवंटन जैसे कार्यों के लिए संघर्षरत रहे।

शुरुआती दिनों में गांव वालों को अनेक संघर्षों से गुजरना पड़ा। सरकारी द्वारा भूमि आवंटन के बावजूद यहां के प्रभावशाली मूल वाशिंदों से जूझना पड़ा। फिर गांव में आबादी भूमि की स्वीकृति, जंगल साफ कर भूमि को कृषि योग्य बनाने, खाले (सिंचाई) सुविधा, आवास आदि समस्याएं मुंह बाए खड़ी थी। पन्द्रह वर्ष के शरणार्थी जीवन के बाद आर्थिक तंगी भी कम नहीं थी। पर यहां के निवासियों की जीवटता, परिश्रम, विश्वास रंग लाया और आज यह गांव बीकानेर जिले के प्रमुख गांवों में शुमार है। सिंचाई, आवागमन एवं शिक्षा में अन्य राजपूत गांवों से अच्छी स्थिति में है। यह गांव बीकानेर जिला मुख्यालय से 100 किमी पश्चिम में, विधानसभा क्षेत्र एवं पंचायत समिति खाजूवाला से 80 किमी व उपखण्ड एवं तहसील पूंगल से 50 किमी की दूरी पर शिवनगर ग्राम पंचायत में स्थित है। दो-चार परिवारों को छोड़कर बाकी सारे राजपूत परिवार हैं।

जिनमें 50 परिवार खावड़िया राठौड़ों के है, जो मल्लीनाथ के पुत्र जगमालजी के वंशज रिड़मल जी (खावड़ प्रदेश) के वंशज हैं। 25 परिवार सुरताण सोढ़ा के हैं जो अमरकोट राणा परिवार से हैं। 40 परिवार सादुल सोढ़ा के हैं जो अधिकांश गांव आबादी से बाहर चकों एवं ढाणियों में रहते है। इसके अलावा डोहट 4, संगरासी 5, अरजन 2, बाड़मेरा 10 व भाटियों के 7 परिवार हैं। अन्य जातियों में 1 नाई, 3 दरजी, 3 सुथार, 1 गोस्वामी का घर है। गांव में एक प्राथमिक सरकारी विद्यालय के अतिरिक्त एक माध्यमिक स्तर का निजी शिक्षण संस्थान संचालित है। 3 किमी दूर पंचायत मुख्यालय पर उच्च माध्यमिक विद्यालय है। पटवार भवन, कृषि सेवक भवन, प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र, आंगनवाड़ी के अलावा 8-10 सामुदायिक भवन हैं जो 'कोटड़ी' के उपयोग में आते हैं। ई-मित्र एवं मिनी बैंक की सुविधा के साथ आवागमन हेतु बाड़मेर, चौहटन, जैसलमेर, बीकानेर, खाजूवाला, पूंगल, बज्जू के लिए सीधी बसें है। आशापुरा गांव में श्री करणीजी, बांकल माता, शिवजी, नखतबन्ना, भभूतपुरी, पिथौरा जी के मंदिर हैं। आसपास के क्षेत्र में गांव की अच्छी प्रतिष्ठा है। पंचायत चुनाव में कुल पांच में से चार बार राजपूत सरपंच रहे हैं। एक बार आरक्षण के कारण अन्य रहा। वर्तमान में भी कमलसिंह सरपंच हैं। नहर एवं भूमिगत जल की उपलब्धता के कारण गांव हरा-भरा एवं उपजाऊ है। गेहूं, सरसों, मूंगफली, ग्वार की अच्छी पैदावार होती है। गांव में स्व. डूंगरसिंह ने शिक्षा की अलख जगाई जिसके कारण युवा पीढ़ी शिक्षा क्षेत्र में नाम कमा रही है। 20 लोग सरकारी सेवा में हैं जिनमें 8 शिक्षा विभाग में हैं। इसके अलावा गांव के युवा, मुम्बई, पूना, गुजरात, दिल्ली, चीन आदि में अपना व्यवसाय करते हैं। इस गांव पर श्री क्षत्रिय युवक संघ की भी मेहरबानी रही, यहां एक माध्यमिक एवं 4 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हो चुके हैं। माननीय संघ प्रमुख श्री का भी दो बार सानिध्य प्राप्त हो चुका है। गांव में संघ प्रवेश 1990 में हुआ। श्री डूंगरसिंह आशापुरा ने शाखा प्रारम्भ की। जो बीच के कुछ वर्षों को छोड़कर आज तक अनवरत लग रही है। आज भी गुलाबसिंह, रेवन्तसिंह, शक्तिसिंह, हड़वंतसिंह, शोभसिंह, गणपतसिंह, भाखरसिंह, भगवानसिंह प्रथम, भगवानसिंह द्वितीय, तखतसिंह, अशोक सिंह, उमरावसिंह, मदनसिंह आदि सक्रिय स्वयंसेवक हैं।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

कथा - ए - जींस

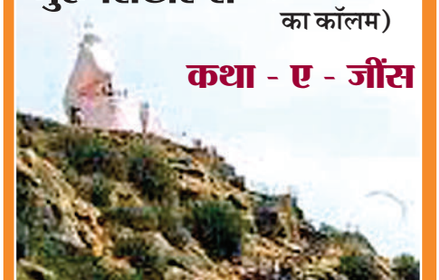

स्वरूपसिंह झिंझनियाली

जींस संसार भर में हर जगह और हर उम्र के व्यक्ति का पंसदीदा पहनावा है। सामान्यतः जींस पेंट के रूप में ही पहनी जाती है। बरमूडा, सोर्टस्, जैकेट आदि भी जींस से बनते है। मूलतः जींस ब्लू रंग का खद्दर सा मोटा कपड़ा होता है। आजकल जींस ब्लू (नीलारंग) के अलावा अन्य रंगों में भी बाजार में उपलब्ध है। भारत में जींस बच्चों से लेकर बूढ़ों तक पसंद किया जाता है। जवान लड़के-लड़कियां तो इसके दीवाने हैं। कुल मिलाकर जींस दुनिया भर में फैशन का केजुउल पहनावा माना जाता है। आज विश्व भर में जींस विभिन्न ब्रांड के नामों में उपलब्ध है। लेकिन मूलरूप से जींस की उत्पत्ति की कहानी इस तरह शुरू होती है। जर्मनी के जन्मे लेवी स्ट्रास 1847 में अपने परिवार के साथ अमेरिका में आकर बस गए। यहां अपने भाइयों के साथ कपड़े का व्यापार शुरू किया। न्यूयॉर्क, केन्टुकी के बाद अन्ततः उन्होंने सेनफ्रांसिस्को में अपने बहनोई के साथ मिलकर एक कपड़े का स्टोर खोला और नाम दिया लेवी स्ट्रास एण्ड कम्पनी। लेवी अपने साथ जर्मनी से लाया मोटा कपड़ा यहां मजदूरों को बेचने लगे। रफ एण्ड टफ होने के कारण यह कपड़ा मजदूरों में ज्यादा पोपूलर हो गया। वे इस मोटे कपड़े की पेंट सिलवाते थे जो मजबूत होने के साथ-साथ कई दिन तक बिना धोये चल जाती थी। लेवी के पास जर्मनी से लाया मोटा कपड़ा जब खत्म हो गया तो उन्होंने फ्रांस से नीला डेनिम फेब्रिक मंगवाना शुरू किया और लेवी का बिजनेस इस कपड़े के पीछे चल पड़ा। अब लेवी ने 1873 में अपने घर में ब्लू जींस का कारखाना खोल दिया। जींस पेटेंट कराया दिया। पेंट में धातु के रिबिट लगाना शुरू किया और जींस की वेस्ट (कमर) पर लैदर (चमड़े) का टैग लगाया जिस पर 'Levi's' के ट्रेड मार्क के साथ विपरीत दिशा में खींचते दो घोड़ों की फोटो व 501 नम्बर प्रिन्ट था। इस तरह ब्लू जींस का अविष्कार हुआ। लेवाइस (Levis) के नाम ट्रेडमार्क जीन्स दुनिया भर में प्रसिद्ध हुई और इसके साथ ही लेवी स्ट्रास का नाम भी प्रसिद्ध हुआ। मूलतः अमेरिका के खदान मजदूरों की देखादेखी ब्लू जींस हिप्पीज (नशेड़ी गोरे) जिप्सिज (खानाबदोश) काऊबॉय (अमेरिका के गायों के चरवाहे) के साथ युवाओं में ज्यादा पोपूलर हुई। जींस के रिंकल फ्री और फिक्स साइज लोगों के मध्य ज्यादा पसंद किए जाने लगे। बाद में यह जींस स्ट्रेचेबल (खींचने वाली) भी आ गई। इसमें कई अन्य रंग ब्लू के साथ चल पड़े। परन्तु आज भी इसका मूल नीला रंग ही सर्वत्र स्वीकार्य रंग है। ब्लू डेनिम जींस की तो अपनी अलग ही ठसक है और आज यह संभ्रान्त समाज की पोशाक का अभिन्न हिस्सा है। लिवोइस जींस ने डोकर्स, डेनिजनि, सिगनेचर जैसे अन्य नामों से भी अपने ब्रांड बाजार में उतारे। आज लेवाइस के भारत सहित दुनिया भर में स्टोर्स हैं जो ब्लू जींस के साथ अन्य रेडिमेड कपड़े बेचते हैं। परन्तु गौरतलब बात यह है कि जिन लेवी स्ट्रास ने दुनियां को जींस दी, उन्होंने खुद इसे कभी नहीं पहना। शायद उस समय यह मजदूरों अथवा नीचे तबके के लोगों का पहनावा रहा होगा। जींस कुल मिलाकर 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध के बाद ज्यादा प्रसिद्ध हुई और इसने फैशन एवं पेशन का रूप अख्तियार कर लिया।

शाखा सहयोगियों की बैठक

बाड़मेर : शहर प्रांत के शाखा सहयोगियों की बैठक 23 जुलाई को मोहन गुरुकुल छात्रावास गांधी नगर बाड़मेर में रखी गई जिसमें प्रांत प्रमुख महिपालसिंह चूली, सह प्रांत प्रमुख छगनसिंह लुणु, नगर प्रमुख अशोक सिंह भीखसर, मंडल प्रमुख भगवानसिंह दूधवा, सुजानसिंह देदुसर, सांवलसिंह भैंसड़ा, प्रेमसिंह भिंयाड़ सहित शाखाओं के सहयोगी उपस्थित रहे। बैठक में शाखाओं के बेहतर संचालन में सहयोगियों की भूमिका को लेकर चर्चा की गई। साथ ही शाखा के प्रभावी संचालन में आने वाली कठिनाइयों एवं उनके निराकरण को लेकर चर्चा की गई। संघ के पूर्व संघ प्रमुख पूज्य नारायणसिंह जी की जयंती बाड़मेर शहर में दो स्थानों पर मनाने का निर्णय लिया गया।

बापिणी : संघ के जोधपुर संभाग के ओसियां प्रांत की बैठक 25 जुलाई को बापिणी स्थित गणेश विद्यालय में संपन्न हुई। बैठक में कार्य योजना शिविर के बाद हुए संघ कार्य की समीक्षा की गई एवं मांगलियावाटी क्षेत्र में पूर्व में लग चुकी शाखाओं बापिणी, बेदु, कड़वा, भादां, मेफा आदि को नियमित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। संघशक्ति पथप्रेरक के ग्राहक बनाए गए। संभाग में अगस्त माह में आयोजित होने वाले शिविरों की चर्चा की गई। प्रांत प्रमुख प्रेमसिंह पांचला, सह प्रांत प्रमुख गौरखसिंह बापिणी, पदमसिंह ओसियां, भोमसिंह बेदु सहित क्षेत्र के स्वयंसेवक बैठक में उपस्थित रहे।

रामगढ़ : श्री क्षत्रिय युवक संघ के रामगढ़ प्रांत में 16 जुलाई को शाखाओं के शाखा प्रमुखों, शिक्षण प्रमुखों एवं विस्तार प्रमुखों की एक दिवसीय कार्यशाला राजपूत छात्रावास रामगढ़ में रखी गई। कार्यशाला में उपस्थित स्वयंसेवकों को शाखा के शिक्षण एवं विस्तार हेतु तय दायित्वों के बारे में विस्तार से समझाया गया। शाखाओं के कार्यक्रम के बारे में संभागीयों को बताया गया कि आदर्श शाखा में खेल, सहगायन, चर्चा एवं प्रार्थना चारों आयाम होने चाहिए। शाखाओं के स्तर के अनुसार इन चारों का अनुपात तय किया जाता है। शाखा प्रपत्र को भरने एवं भेजने की प्रक्रिया के बारे में भी उपस्थित स्वयंसेवकों को बताया गया। 4 अगस्त से अर्जुना में होने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के बारे में भी विस्तार से चर्चा की गई। प्रत्येक शाखा द्वारा संख्या के लक्ष्य लिए गए।

टापरा व बाड़मेर बीजीए में वृक्षारोपण

बालोतरा के निकट टापरा गांव में शाखा के स्वयंसेवकों के सहयोग से 21 जुलाई को भोमीयाजी की छतरियों के परिसर में नीम के वृक्ष लगाए गए। इस अवसर पर अचलसिंह भाटी, जालमसिंह भोपाजी, राणसिंह, बलवंतसिंह, धर्मसिंह, तनसिंह, कमलसिंह, मदन प्रजापत आदि लोग उपस्थित थे।

बाड़मेर स्थित शिविर स्थल भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक नरपतसिंह चिराना के निर्देशन में पौधरोपण किया गया जिसमें छगनसिंह लुणु, किशनसिंह चूली, महेन्द्रसिंह तेजमालता आदि स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

दक्षिणी छोर में संघ की शाखा

भारत के दक्षिणी छोर केरल राज्य के त्रिशुर में श्री क्षत्रिय युवक संघ की एक साप्ताहिक शाखा प्रारंभ हुई है। बाड़मेर के मीठड़ी गांव के मूल निवासी व वहां व्यवसायरत आशुसिंह मीठड़ी ने वहां रह रहे अन्य समाज बंधुओं से चर्चा कर यह शाखा प्रारम्भ की है। दक्षिणी राज्य केरल में यह प्रथम शाखा है।

रघुवीर सिंह जावली जयंती

आगामी 20 अगस्त को अलवर में स्वर्गीय रघुवीरसिंह जावली की जयंती मनाई जाएगी। वरिष्ठ अधिवक्ता देवेन्द्रसिंह राघव ने बताया कि मोती डूंगरी अलवर स्थित स्वरूप विलास में 20 अगस्त को प्रातः 11 बजे जयंती मनाई जाएगी जिसमें क्षेत्र के समाज बंधु श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

जयपुर संभाग में सम्पर्क यात्रा

जयपुर ग्रामीण प्रांत के प्रांत प्रमुख देवेन्द्रसिंह बड़वाली ने अपने साथियों सहित फुलेरा क्षेत्र में सम्पर्क यात्रा की। जिसमें शिविर स्थल देखकर शिविर तय किया गया। पीपली का वास व माल्यावास में सम्पर्क कर स्नेहमिलन तय किए।

महाराष्ट्र के सतारा में बैठक

सतारा (महाराष्ट्र) के नवदुर्गा मंदिर में विगत 23 जुलाई को एक बैठक आयोजित की गई। जिसमें स्थानीय समाज बंधुओं ने भाग लिया। बैठक में समाज बंधुओं को संघ का परिचय दिया गया एवं आगामी 13 से 15 अगस्त तक आयोजित होने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर की व्यवस्था को लेकर चर्चा की गई।

बीकानेर संभाग की समीक्षा बैठक

श्री क्षत्रिय युवक संघ के बीकानेर संभाग की समीक्षा बैठक 23 जुलाई को संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ के सानिध्य में संपन्न हुई। बैठक में कार्य योजना शिविर में बनी योजना की बिन्दुवार समीक्षा की गई। निकट भविष्य में लगने वाले शिविरों को लेकर चर्चा की गई एवं शिविर से पहले सम्पर्क यात्रा की योजना बनाई गई। इन शिविरों में आने वाले उभरते स्वयंसेवकों की सूची बनाकर आगामी उच्च प्रशिक्षण शिविर तक उनसे लगातार सम्पर्क रखने का निर्देश दिया गया। शाखाओं की रोचकता बनाए रखने को लेकर चर्चा हुई एवं निरंतर पर्यवेक्षण की आवश्यकता पर बल दिया गया। 6 अगस्त को दुर्गादास जयंती के अवसर पर डूंगरगढ़ प्रांत में कार्यक्रम रखने को लेकर योजना बनाई गई। बैठक में वरिष्ठ स्वयंसेवक कानसिंह बोघेरा, उम्मेदसिंह सुल्ताना, जोरावरसिंह भादला, मातुसिंह मानपुरा सहित प्रांत प्रमुख व मंडल प्रमुख उपस्थित रहे। कर्मचारी प्रकोष्ठ के संभागीय प्रभारी दयालसिंह ने कर्मचारी प्रकोष्ठ की जानकारी दी।

आग्रह

सभी बंधुओं से निवेदन है कि

स्व. श्री उम्मेदसिंह खिंदासर

द्वारा लिखित पुस्तकें :

● महाराणा की ओळ्यू ● अतीत रा गीत

किसी महानुभाव के पास हो तो निम्न पते पर सम्पर्क करें :

श्री प्रभातसिंह खिंदासर, खिंदासर हाऊस, ग्रा.पो. कोलायत, जिला-बीकानेर, मो.नं. 98288-10071

स्वतंत्रता दिवस पर पथप्रेरक के पाठकों को हार्दिक शुभकमनाएं

ADHIRAJ SINGH
DEVENDRA RAGHAVA
Advocate

Supreme court of India associated with aura and co.
205, Jagdish Enclave, Opp. Ram Mandir
D-291, Defence Colony, New Dehli

Hawa Sadak, Civil Line, Jaipur
Mobile ; 09166882037, 09460191101

संपादकीय

विकल्प खुले रखना है श्रेष्ठ उपाय

आनंदपाल प्रकरण के बाद समाज में जगह-जगह भाजपा के विरोध की बातें हो रही हैं। अनेक गांवों में भारतीय जनता पार्टी के बहिष्कार की बात चल रही हैं। सोशल मीडिया पर अनेक लोगों ने कमल के निशान के क्रॉस लगाकर अपना प्रोफाइल पिक्चर बनाया है। इस प्रकार लगता है कि पूरे समाज में भाजपा के प्रति जबरदस्त आक्रोश है एवं एक सुखद सा अहसास हो रहा है कि गुलामी के स्तर तक समाज जिस पार्टी का समर्थन करता है उससे दूर हो रहा है और होना भी चाहिए। वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों में यदि कोई समाज किसी दल विशेष के प्रति इतना अंध समर्थन रखता है तो लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह उस समाज के अस्तित्व के लिए घातक होता है। संबंधित राजनीतिक दल उसके साथ बंधुआ मतदाता का सा व्यवहार करता है एवं अन्य राजनीतिक दल उसके समर्थन के प्रति कभी आशाजनक नहीं होते। ऐसा ही व्यवहार हमारे समाज के साथ व्यवहार हो रहा है। विगत 15 वर्ष से अधिक समय से सामाजिक संस्थाएं इस गुलामी के स्तर तक के समर्थन को तोड़ने का प्रयत्न कर रही हैं और इस बार समाज की प्रतिक्रिया कुछ आशाजनक लग रही है। लेकिन इस अंध समर्थन का कारण कोई सैद्धांतिक नहीं है। सैद्धांतिक रूप से भाजपा मूल रूप से हमारी विरोधी ही रही है और इसके मूल चरित्र में बैठे लोग सदियों से हमारे विरोधी रहे हैं। इस प्रकार सिद्धान्त रूप में भाजपा हमारी विचारधारा से मेल नहीं खाती है। ना ही हम सैद्धांतिक पक्ष के कारण भाजपा समर्थित रहे हैं। आजाद भारत के इतिहास को देखें तो राजस्थान में हमारा कांग्रेस के प्रति विरोध रहा। आजादी के बाद कांग्रेस द्वारा उठाए गए अनेक कदम हमारे हितों के खिलाफ थे साथ ही कांग्रेस का उस समय का मूल उद्देश्य लोगों को हमारे खिलाफ खड़ा कर सत्ता हासिल करना था इसलिए हम प्रारम्भ से ही कांग्रेस विरोधी हो गए और इस कारण राज्य में जो भी दल कांग्रेस के खिलाफ था हम बिना मांगे उसको समर्थन देते रहे। प्रथम आम चुनावों में आई राम राज्य परिषद् कांग्रेस के खिलाफ आई इसलिए हम उसके साथ हुए लेकिन दुर्भाग्य से वह मजबूती से नहीं उभर सकी। उसके बाद आई स्वतंत्र पार्टी, जनता दल आदि पार्टियां सैद्धांतिक रूप से हमारे विचारों के बहुत निकट नहीं थी लेकिन कांग्रेस विरोध की विचारधारा ने हमें उनका समर्थक बनाए रखा। इसी बीच जनसंघ नामक पार्टी उभरी और फिर वही भारतीय जनता पार्टी के रूप में राजस्थान में मजबूत विकल्प बनी। भैरोंसिंह शेखावत के नेतृत्व में हमने इस पार्टी की जड़ों को सींचा एवं चंद शहरों तक सिमटी पार्टी को गांव-गांव तक पहुंचाया। जगह-जगह कांग्रेस पार्टी के लोगों से संघर्ष किया एवं पार्टी को इस स्तर तक पहुंचाया कि वह राजस्थान में सत्तासीन हो सके। लेकिन कालांतर में भाजपा हमें उसे वोट देने को मजबूर मतदाता मानने लगी और हमारी मजबूरी को हमारी कमजोरी मान हमारी उपेक्षा करने लगी। साथ ही राज्य के उन जाति समूहों पर डोरे डालने लगी जो अपनी निष्ठाएं बदलने के लिए जाने जाते हैं। उन जाति समूहों के हितों के लिए हमारे हितों की बलि चढ़ाती रही और विपक्ष में रहते हुए हम जिस पार्टी के आधार बने थे वही पार्टी सत्ता में आते ही अन्यों को अपनी तरफ खींचने के लिए मुक्त हस्त लाभ पहुंचाने लगी। हमारी उपेक्षा का स्तर दिनों-दिन बढ़ता रहा। आज तो यह स्थिति है कि यह पार्टी राजस्थान में इसको सींच कर वटवृक्ष बनाने वाले भैरोंसिंह जी का भी नाम पसंद नहीं करती है। अब हमारे लिए विचारणीय है कि जो पार्टी हमारी हुतात्माओं को ही पसंद नहीं करती वह हमारे जीवित अस्तित्व को तो कैसे स्वीकार करेगी? लेकिन ऐसे में हम क्या करें? क्या हम भाजपा का पूर्ण बहिष्कार कर दें? क्या हम फिर आजादी के बाद के हमारे उसी तरीके को आजमाएं जिस तरीके के कारण हमारे जेहन में कांग्रेस विरोध पनपा था? क्या आज हम कांग्रेस विरोध की अपेक्षा भाजपा विरोध को अपना मुख्य राजनीतिक ध्येय बना लेवें? क्या ऐसा करना उस अनुभूत सत्य की अवहेलना नहीं होगी जिसके तहत हमें भाजपा ने मजबूर मतदाता समझ रखा है? वस्तुस्थिति यह है कि वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में पार्टीगत निष्ठाएं या किसी पार्टी का अंध विरोध दोनों ही मतदाता के महत्त्व के लिए घातक होते हैं। यदि हमारे बारे में यह सोच बनती है कि हम भाजपा विरोधी हैं तो यह हमारे लिए वैसे ही घातक होगा जैसे हमारे पर लगी कांग्रेस विरोधी की छाप के कारण हुआ। ऐसे में श्रेष्ठ उपाय यही है कि हम हमारे विकल्प खुले रखें। किसी भी राजनीतिक दल के प्रति निष्ठा या विरोध को लक्ष्य बनाने की अपेक्षा हमें हमारे हितों को लक्ष्य बनाना चाहिए और जहां जिस दल या उम्मीदवार के समर्थन या विरोध से हमारा हित सधता हो उसी के अनुरूप तात्कालिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित की जानी चाहिए। इसलिए आज चुनावों से एक वर्ष पहले ही हमें यह तय करने की आवश्यकता नहीं है कि हमें किस पार्टी का विरोध या समर्थन करना है बल्कि इस बात की तैयारी करने की आवश्यकता है कि हम हमारे विकल्प खुले रखना सीख जाएं। कोई भी दल न तो इस बात को लेकर आश्वासित हो कि हमारे वोट उसे ही मिलेंगे और ना ही कोई दल इस बात को लेकर आशंकित हो कि हमारे वोट उसे कभी नहीं मिलेंगे। इसलिए आज आवश्यकता है कि विगत दिनों हमारी गुलामी के स्तर तक समर्थन की मानसिकता पर जो चोट लगी है उसे और गहरा किया जाए एवं साथ ही मानसिकता को इस ओर मोड़ा जाए कि हमारे विकल्प खुले हैं। जहां भी समाज रूप में हमारे हित सधेंगे हमारा समर्थन उधर ही प्रवाहित होगा।

अमरसिंह की कटार

वजन मांह भारी थी,
कि रेख में सुधारी थी।।
हाथ में उतारी थी,
कि सांचै हूं में ढारी थी।।
हाथ में हटक गई
गुट्टी सी गटक गई।
फेफड़ां फटक गई,
आंकी बांकी तारी थी।।
शाहजहां कहे यार,
सभा मांही बार-बार।
अमर की कमर में,
कहां की कटारी थी।।
शाह को सलाम करी,
मार्‌यो थो सलावत खां।
दिखा गयो मरोड़,
सूर वीर धीर आगरा।।
मीर उमरावन की,
कचेड़ी धुजाय सारी।
खेलत शिकार ज्यूं,
मिरगन में बाघ रो।।
कहे पानराय,
गजसिंह के अमरसिंह।
राखी रजपूती,
मजबूती नव नागरो।।
पाव सेर लोह सूं,
हिलाई सारी पातशाही।
हो तो समशेर तो,
छिनाय लेतो आगरो।।

प्रेषक : मातुसिंह मानपुरा

शाखा के मैदान से

श्री तल्लिनाथ शाखा
पांचोटा-जालोर

खरी-खरी

अतिरेक का प्रवाह

समाज से संबंधित हर मुद्दे में हम अतिरेक के प्रवाह में जीते हैं। हर छोटी-बड़ी बात के लिए आर या पार का आह्वान करते हैं और हर मुद्दे को जीवन-मरण का प्रश्न बना लेते हैं। हमारे नासमझ जोशीले युवा तो हरदम अतिरेक के प्रवाह में ही रहते हैं और अनेक स्वार्थी एवं गैर जिम्मेदार लोग इस अतिरेक का अपने हित साधने में उपयोग कर लेते हैं। मरने-मारने के मध्यकालीन युग का प्रभाव आज भी हमारे खून पर इतना अधिक छाया हुआ है कि आज के युग में भी हम हर छोटी बड़ी बात पर मरने-मारने को उतारू रहते हैं और हमारा यह अतिरेक युगानुकूल न होने के कारण युग के हथियारों के समक्ष हम फिर हार जाते हैं या विरोधियों को हमारी गलतियों के कारण अनावश्यक रूप से हमारे विरुद्ध हथियार उपलब्ध करवा देते हैं। साथ ही इस अतिरेक के प्रवाह का सर्वाधिक शिकार हमारे अपने ही होते हैं। जो भी व्यक्ति इस अतिरेक की अपेक्षा युगानुकूल हथियारों से लड़ने की बात करता है वही हमारे इस अतिरेक का शिकार होता है और जो भी इस अतिरेक में जीना नहीं चाहता उसे हम अतिशीघ्र कौम का दुश्मन घोषित कर देते हैं। अतिरेक के इस प्रवाह में हम शत्रु और मित्र की पहचान करने की क्षमता खो चुके होते हैं और इसका परिणाम यह होता है कि जो व्यक्ति युगानुकूल तरीकों से हमारा सहयोग कर रहा होता है लेकिन अपनी मजबूरियों के कारण प्रकट में हमारे साथ नहीं आ पाता वह हमारा दुश्मन घोषित हो जाता है और जो वाही-वाही लूटने के लिए हमारे ही तरीकों को अपनाने को प्रस्तुत हो जाता है, उसे हम नायक बनाकर वाही-वाही करने लगते हैं। साथ ही जो वास्तव में हमारे इन मुद्दों को आधार बनाकर राजनीति कर रहे होते हैं उनको तो हम सिर आंखों पर बिठाते हैं और जो लोग खामोशी से राजनीति किए बिना अपने आपको बचाते हुए हमारा सहयोग कर रहे होते हैं वे हमारी गालियों के शिकार होते हैं। ऐसे में समाज के लोगों को यह विचार करना चाहिए कि हमें कैसे लोगों का साथ चाहिए? हम किन लोगों को हमारे आगे चलता देखना चाहते हैं? क्या हम यह चाहते हैं कि समाज के वे लोग जो श्रेय लेने की होड़ से बचते हुए खामोशी से हमारा सहयोग करते हैं, वे सहयोग करना बंद करे दें? यदि हम समाजसेवी का सर्टिफिकेट बांटने के इस तरीके को नहीं बदलेंगे तो ऐसा ही होगा और हमारे समाज के अनेक संजीदा लोगों का समर्थन खोकर उन्हें अपना विरोधी बना लेंगे। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम हर विषय को समाज के लिए जन्म-मरण का प्रश्न बनाकर अतिरेक में जीना बंद करें और युगानुकूल हथियार अपनाएं।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	बाल शिविर	12.08.2017 से 13.08.2017 तक	महाराणा कुंभा छात्रावास, भीलवाड़ा।
2.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	13.08.2017 से 15.08.2017 तक	शिवाजी उदय क्रीड़ा संकुल, 261 मंगलवा पेठ, अनंत स्कूल के पास, सतारा। सम्पर्क सूत्र : भीखसिंह : 98233-68935 कंवराजसिंह : 87967-40837
3.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	13.08.2017 से 16.08.2017 तक	रामेश्वर महादेव मंदिर, लवासा सिलवासा (वापी) लवासा गांव से 500 मीटर दूर शिविर स्थल है। सम्पर्क सूत्र : 7878035598, 9427129615
4.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	31.08.2017 से 03.09.2017 तक	आंजना महादेव मंदिर भीलवाड़ा। भीलवाड़ा देवगढ़ मार्ग पर।
5.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	31.08.2017 से 03.09.2017 तक	मडिया (सिरोही)। जालोर से रामसीन होकर, सिरोही से कालन्द्री होकर व रेवदर से जसवंतपुरा होकर मडिया पहुंचे।
6.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	31.08.2017 से 03.09.2017 तक	जालेटी माता मंदिर, कोलर (पाली)। जोजावर व मारवाड़ जंक्शन से बसें उपलब्ध।
7.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	01.09.2017 से 03.09.2017 तक	नरोड़ा (गुजरात) अहमदाबाद स्टेशन से 10 किमी दूर।
8.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	01.09.2017 से 03.09.2017 तक	पडुस्मा (गुजरात) विसनगर माणसा हाईवे, विकास चौराहा से 5 किमी दूर चामुण्डा माता मंदिर।
9.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	01.09.2017 से 04.09.2017 तक	बरजांगसर (बीकानेर) श्री डूंगरगढ़-कातर मार्ग पर। श्री डूंगरगढ़ से (9, 11 व 1.30 बजे बसें उपलब्ध)।
10.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	02.09.2017 से 04.09.2017 तक	मोरचंद (गुजरात)।
11.	बाल शिविर	02.09.2017 से 03.09.2017 तक	नारायण निकेतन बीकानेर
12.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	सगरां, देचू से 3 किमी दूर, जिला-जोधपुर।
13.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	बूढेश्वर महादेव, भूतगांव (सिरोही)। जावाल से 4 किमी दूर।
14.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	संस्कृत विद्यालय, सिवाड़ा। धोरीमन्ना-सांचौर रोड पर स्थित।
15.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	आशापुरा माता मंदिर, नाडोल। रानी, पाली, देसूरी, सादड़ी, बाली से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ। पाली-उदयपुर मेगा हाईवे पर स्थित।
16.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	करगचिया (घाटोल) बांसवाड़ा-जयपुर नेशनल हाईवे 113 से 2 किमी अन्दर।
17.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	वणवासा (डूंगरपुर) साबला-विजवामाता जी रोड पर आसपुर।
18.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	जालेला, मातेश्वरी विद्यालय। शिव से जालेला पहुंचे।
19.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	धनवा (संत भोलाराम जी मंदिर)। मिठोड़ा-सिणधरी रोड पर।
20.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	थोब (कीकाजी बावजी का मंदिर)। बालोतरा-शेरगढ़ मेगा हाईवे पर स्थित।
21.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	पारासरा। फलसूंड व पोकरण से सुबह 7 बजे से हर घंटे बस, बाड़मेर से बस।
22.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	बीठे का गांव, नाचना से बीकमपुर, बीकमपुर से नोख या पोकरण फलोदी से बाप, बाप से नोख हर घंटे बस उपलब्ध।
23.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	बैनाथा, तहसील बीदासर (चूरू)।
24.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	14.09.2017 से 17.09.2017 तक	सनाई। जोधपुर से धुंधाड़ा मार्ग पर स्थित है।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज, काली जूती व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

मीरा महिमा

श्रवणसिंह राजावत

संत संदेशो भेजियो, नहीं देखे वे नार।
नारी रो मुख जोवता, जाऊं जमारो हार।।641।।

मीरा मुख मुलकी मना, मैं सुनी आ बात।
पुरुष एक है सांवरो, दूजो नहीं लखात।।642।।

जा केवो संदेशड़ो, संता ने थे जार।।
मीरा नारी है भली, थे भी हो अब नार।।643।।

गयो सेवक गोंसाई कने, सुणी सो दी सुनाय।
ज्ञान पट खुल्या घणा, मीरा सामो आय।।644।।

मीरा आगे महात्मा, अरज करी कर जोर।
माफ कराज्यो म्हावली, गलती कीनी और।।645।।

खोली आंख्या खूब थे, आज तलक अनजान।
मीरा कैवे मानज्यो, कण-कण में भगवान।।646।।

नर नारी न्यारा नहीं, सब है एक समान।
भेद करे सो भूल है, निश्चय वो नादान।।647।।

सब घट में है सांवरो, सदा रह्यो समाय।
रोम-रोम में रम रह्यो, नेणा दीसे नाय।।648।।

चकमक घीसिया चानणो, तिल मांही ज्यों तेल।
सदा बिराजे सांवरो, खेले जग में खेल।।649।।

दूध जमाया बणे दही, बीनें देय बिलोय।
माखन निकले मोकलो, जतन करे जद कोय।।650।।

आसन दृढ़ जमाय अब, मथे मन ने मजबूत।
मिले माखन ज्यूं मोहनो, सांचो यो सबूत।।651।।

नाम जाप नित नेत, सब साधन है इस काज।
जो कोई जन वापरे, मुगती व्हे महाराज।।652।।

प्रेम बड़ो संसार में, रीझे इणसू राम।
प्रेम करो भगवान सूं, करणो इतरो काम।।653।।

ईश्वर कोनी आंतरो, सदा रैवतो साथ।
प्रेम करिया परगटे, तीन लोक रो नाथ।।654।।

पल बिसरो न राम ने, सुमरो आठ जाम।
हिरदे धारया राम ने, करो जगत का काम।।655।।

भजन करो भगवान का, मगन होय मन माय।
सदा संगत साधु री, गोविंद रा गुण गाय।।656।।

राजा सारा जगत रो, पूरे सबकी आश।
पाले पोसे प्रेम सूं, रख वालो विश्वास।।657।।

मिनख जमारो ओ मिल्यो, भगती करवा ताण।
लख चौरासी भोगिया, इण जूणी में आण।।658।।

कर्म सारा अर्पण करो, नंद नंदन रे नाम।
सांवरिया रै हाथ में, सबकी है लगाम।।659।।

इक पल भी आगा नहीं, हमदम दैवे साथ।
सेवा करो सांतरी, राजी हुवै नाथ।।660।।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
कृष्णा नगर-I, लालकोठी स्कीम, जयपुर
मो. 9636977490, 0141- 4015747
website : www.springboardindia.org

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय
सवाईसिंह पुत्र श्री कालुसिंह
का ग्रामसेवक के रूप में चयन होने पर
हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं
शुभेच्छु : राणसिंह टापरा एलआईसी अभिकर्ता
एवं समस्त महेचा परिवार, टापरा

श्री दुर्गासिंह जी रूद का देहावसान

'मेवाड़ में संघ का बीजारोपण करने वाले प्रथम व्यक्ति'

स्व. श्री दुर्गासिंह जी रूद का जन्म 18 नवम्बर 1940 में हुआ। 77 वर्ष की यात्रा में खूब उतार-चढ़ाव के बाद 21 जुलाई 2017 की शाम 5.20 बजे अंतिम सांस के साथ इस देह को अलविदा कह दिया। ठिकाना रूद, तहसील राशमी, जिला चित्तौड़गढ़ में ठिकाने के ठाकुर साहब के छोटे भाई मदनसिंह जी के घर जन्म लिया। बचपन में कक्षा चार तक गांव में ही अध्ययन किया। फिर चौपासनी आ गए और पढ़ाई के साथ-साथ शाखा एवं शिविरों में जाना शुरू कर दिया। वहीं से तनसिंह जी से सम्पर्क में आए और उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनको आत्मसात कर श्री क्षत्रिय युवक संघ के होकर पूरी जिन्दगी भर उत्साह एवं उमंग के साथ संघ को घर-घर पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा संचालित भू-स्वामी आंदोलन में मेवाड़ में सक्रिय हुए। सन् 1965 में क्षत्रिय महासभा की ओर से चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर बहुत बड़ा सम्मेलन हुआ जिसमें पूरे भारत एवं राजस्थान के राजा-महाराजा, जागीरदार सहित खूब राजपूत एकत्रित हुए। उसमें पूजनीय तनसिंह जी को बुलाया गया था। उस सम्मेलन के संचालन में भी अग्रणी सहयोगी रहे। कोई भी कार्य हो उनका मैनेजमेंट (सुव्यवस्था) इतना अच्छा रहता था कि कार्य की सफलता स्वयं ही इसे महसूस करा देती थी। चाहे शिविर हों, स्नेहमिलन हों, जयंतियां हों, सम्पर्क यात्राएं हों सभी में आशा से अधिक परिणाम उनकी सूझबूझ व पूर्व नियोजित व्यवस्था के ही कारण संभव था। वे राजनीति में भी लम्बे समय तक जुड़े रहे। उनकी पहुंच राजनीति के ऊंचे से ऊंचे पदों पर बैठे लोगों तक बहुत ही प्रभावशाली ढंग से थी। राजनीति में उनका भैरोसिंह जी शेखावत से लम्बा रिश्ता रहा है। सफेद धोती, कमीज और चूनड़ी का साफा उनकी पूरे देश में पहचान थी, विदेश यात्रा में भी उन्होंने धोती-साफा और कमीज ही धारण किए रखा। दुर्गासिंह जी भाजपा के सहकारिता प्रकोष्ठ के राजस्थान के अध्यक्ष पद पर रहे। भूमि विकास बैंक के प्रदेश के चेयरमैन भी पांच वर्ष तक रहे, साथ ही नाबार्ड बोर्ड के राष्ट्रीय स्तर पर उपाध्यक्ष भी रहे। अन्य सामाजिक संस्थाओं में भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। जो काम हाथ में लिया, उसमें उन्होंने मेहनत में कहीं कसर नहीं छोड़ी, समाज हित में कठोर निर्णय भी लिए, समाज का विरोध भी झेलना पड़ा तो वो पीछे नहीं हटे। सामाजिक हित को प्राथमिकता देते हुए पढ़ाई पूरी करने के बाद सहकारी विभाग में नौकरी लगी उसको छोड़कर श्री महाराणा भूपाल राजपूत छात्रावास का वार्डन पदभार संभाला। सोच यही कि छात्रावास में शाखा लगवाएंगे और क्षत्रिय बालकों को शिविर में निरन्तर ले जाते रहेंगे और ऐसा किया भी। बाद में पूज्य तनसिंह जी के सानिध्य में 1969 में व्यापार में भी शामिल हुए। तनसिंह जी द्वारा संचालित व्यापार में नौकरी करते हुए व्यापार सीखा और 1972 से 1985 तक कृषि उपकरण व ट्रैक्टर्स का व्यापार किया। सन् 1982 में जौहर स्मृति संस्थान की व्यवस्थित गतिविधियां शुरू कर खुद संस्थान के महामंत्री पद पर रहते हुए सफलतम आयोजन कराए जिनको जनता आज भी याद करती है। संस्थान को शिखर तक पहुंचाया। सन् 2002 से 2010 तक श्री महाराणा भूपाल शिक्षा समिति के अध्यक्ष पद पर रहते हुए संस्था का कायाकल्प कर दिया। पब्लिक स्कूल व छात्रावास संचालन का जिम्मा कड़ी मेहनत के साथ निभाया साथ ही पूरे भवन का पुनर्निर्माण कराया और अच्छे प्रबंधक रूप में अपनी पहचान कायम की। कर्मशीलता उनमें कूट-कूट कर भरी थी। वे कभी निष्क्रिय नहीं रहे और हमेशा कहा करते थे कि श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं पूज्य तनसिंह जी की सीख का अगर हम पालन नहीं करेंगे तो इस युग में हम नाजोगे सिद्ध होंगे। श्री क्षत्रिय युवक संघ ने हमें क्या नहीं दिया और इस ऋण को उतारने का यही एकमात्र रास्ता है, बस! निष्क्रिय नहीं रहें। अन्तिम समय में मई में ग्रीष्णकालीन बालिका शिविर का चित्तौड़गढ़ में करने का सुना तो दो माह पहले ही तैयारी की रूपरेखा तैयार कर ली और सम्पर्क यात्रा में मुझे साथ लेकर निकल पड़े। करीब 350 बालिकाओं का शिविर समापन के बाद उन्होंने हर्ष व्यक्त किया। इस सब का श्रेय वे पूज्य तनसिंह जी को देते थे और बचपन से ही तनसिंह जी के नजदकियों का पूरा लाभ लेते हुए तनसिंह जी के अन्तिम क्षणों तक हमेशा जुड़े रहे और निष्क्रिय नहीं हुए। अगस्त 1958 में आपने जोधपुर में पहला शिविर किया। मई 1959 के हल्दीघाटी उ.प्र.शि. के बाद सक्रिय स्वयंसेवक के रूप में क्रियाशील हुए और अंतिम समय तक सक्रिय रहे। अपने जीवन काल में 24 उ.प्र.शि., 29 मा.प्र.शि., 19 प्रा.प्र.शि. व 5 विशेष शिविर किए।

गंगासिंह साजियाली

बाल शाखाएं

जैसलमेर के मूलाना गांव में लंबे समय से संघ की शाखा लगती है। विगत दिनों यहां छोटे बालकों की एक नई शाखा प्रारम्भ की गई। इसका नामकरण पिथोरा बाल शाखा किया गया है। इसी प्रकार कुचामन में भी बाल शाखा प्रारम्भ की गई है।

बालिका छात्रावास हेतु सूचना

क्षत्रिय सभा बीकानेर द्वारा संचालित श्री करणी कन्या छात्रावास में समाज की 90 प्रतिशत से अधिक अंक वाली छात्राओं को समस्त सुविधाएं निःशुल्क दी जाएंगी। 80 प्रतिशत वाली बालिकाओं को भोजन निःशुल्क एवं 70 प्रतिशत वाली को मेंटेनेंस खर्च में छूट दी जाएगी। सभाध्यक्ष बजरंगसिंह रोयल ने बताया कि योग्य बालिकाएं या उनके अभिभावक सभा कार्यालय में सम्पर्क कर विस्तृत जानकारी लें एवं समाज के छात्रावास का लाभ उठावें।

एक वर्ष में आठ प्रतियोगी परीक्षाओं में चयन

आरक्षण जैसी बाधाओं के बावजूद हमारे समाज के अनेक युवा अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं। ऐसी ही प्रतिभा हैं मुम्बई की कल्लारायमलोत शाखा के स्वयंसेवक गोपालसिंह नारादरा। इन्होंने विगत एक वर्ष में कर्मचारी चयन आयोग, रेलवे स्टेशन मास्टर, क्लर्क द्वितीय श्रेणी, डी.आर.डी.ओ. की हथियार फैक्ट्री में स्टोर कीपर, पटवारी आदि 8 परीक्षाएं पास की हैं। गोपालसिंह वर्तमान में भारतीय सेना की हथियार निर्माण फैक्ट्री अम्बरनाथ में द्वितीय श्रेणी क्लर्क के रूप में कार्यरत है। इनके पिता नारायणसिंह नारादरा व छोटे भाई पुष्पेन्द्रसिंह भी संघ के स्वयंसेवक हैं।

(पृष्ठ एक का शेष)

आइए...

लेकिन उस आशीर्वाद में क्या चाहें? क्या मांगे? दाता से वहीं मांगना चाहिए जिसका उसके पास भंडार हो और दुर्गाबाबा के पास यदि कोई भंडार है तो वह उनका समाज चरित्र है। यदि उनके पास से कुछ मांगना है तो उनकी वह क्षमता मांगें जिसने उन्हें औरंगजेब के मारवाड़ का राज्य देने तक के प्रस्ताव को सहज ही ठुकराने की ताकत दी। उनसे वह क्षमता मांगे जिसने उन्हें मारवाड़ से निष्कासन के बाद भी सदैव मारवाड़ के लिए चिंतित रखा। वह क्षमता जिसने मारवाड़ से निष्कासन के बावजूद भी दिल्ली के शासकों द्वारा मारवाड़ के विरुद्ध अभियान का नेतृत्व करने के प्रस्ताव को ठुकराने की ताकत दी। जिन्होंने अपने इस समाज चरित्र के बल पर अपने व्यक्तित्व को इस स्तर का बनाया कि उसके बल पर सांभर के युद्ध के समय मारवाड़, मेवाड़ और जयपुर को साथ होना पड़ा। उनकी व्यक्तिगत वीरता, स्वाभिमान, संघर्षपूर्ण जीवन, कुटनीति, राजनीति आदि सब क्षमताएं केवल और केवल समाज के लिए थी। राष्ट्र के लिए थी ऐसे महापुरुष की जयंती के अवसर पर हम उनसे इसी समाज चरित्र को आशीर्वाद स्वरूप मांगे तो शायद कुछ कदम उनकी ओर बढ़ सकते हैं।

उनसे वह क्षमता मांगे जिसने उन्हें मारवाड़ से निष्कासन के बाद भी सदैव मारवाड़ के लिए चिंतित रखा। वह क्षमता जिसने मारवाड़ से निष्कासन के बावजूद भी दिल्ली के शासकों द्वारा मारवाड़ के विरुद्ध अभियान का नेतृत्व करने के प्रस्ताव को ठुकराने की ताकत दी। जिन्होंने अपने इस समाज चरित्र के बल पर अपने व्यक्तित्व को इस स्तर का बनाया कि उसके बल पर सांभर के युद्ध के समय मारवाड़, मेवाड़ और जयपुर को साथ होना पड़ा। उनकी व्यक्तिगत वीरता, स्वाभिमान, संघर्षपूर्ण जीवन, कुटनीति, राजनीति आदि सब क्षमताएं केवल और केवल समाज के लिए थीं। राष्ट्र के लिए थी। ऐसे महापुरुष की जयंती के अवसर पर हम उनसे इसी समाज चरित्र को आशीर्वाद स्वरूप मांगे तो शायद कुछ कदम उनकी ओर बढ़ सकते हैं।

संचालन...

समाज की कर्मचारी शक्ति में सामाजिक भाव जागृत कर उनकी शक्ति को समाजोपयोगी बनाने के उद्देश्य से गठित इस प्रकोष्ठ की कार्यप्रणाली सदस्यता आदि के नियम तय किए गए। कर्मचारी प्रकोष्ठ के अतिरिक्त इस वर्ष पूर्व सैनिक प्रकोष्ठ, अधिवक्ता प्रकोष्ठ, व्यवसायी प्रकोष्ठ एवं युवा प्रकोष्ठ को सक्रिय करने का निर्णय लिया गया। पूर्व सैनिक प्रकोष्ठ, अधिवक्ता प्रकोष्ठ एवं व्यवसायी प्रकोष्ठ को आगामी दो माह में उचित स्वरूप देने का निर्णय हुआ एवं युवा प्रकोष्ठ के तहत आगामी अक्टूबर माह से प्रत्येक जिले में युवा सम्मेलन करने का निर्णय लिया गया।

कर्मचारी प्रकोष्ठ की बैठक : 16 जुलाई को ही संघशक्ति में कर्मचारी प्रकोष्ठ के संयोजक कृष्णसिंह राणीगांव ने अपने सहयोगियों की बैठक रखी। बैठक में चंदनसिंह चांदेसरा को जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर में, दीपसिंह दूधवा को जालोर, सिरोही, पाली में, श्यामसिंह चिरनोरिया को जयपुर संभाग में, दयालसिंह किशोरपुरा को बीकानेर संभाग में व नरपतसिंह रताऊ को अजमेर संभाग में काम प्रारम्भ करने का दायित्व दिया गया। संचालन कार्यालय द्वारा बताए गए उद्देश्यों के अनुरूप कार्य करने के लिए जिला स्तर पर संघ के सहयोगी कर्मचारियों की एक दिवसीय कार्यशाला रखने का निर्णय लिया गया एवं इसकी तिथियां 31 जुलाई तक संबंधित संभाग प्रमुख एवं प्रांत प्रमुख से मिलकर तय करने का निर्देश दिया गया। 100 रुपए प्रति कर्मचारी सदस्यता शुल्क रखा गया है जो धरोहर राशि के रूप में संरक्षित रहेगी एवं उसमें से केवल स्टेशनरी खर्च ही लिया जा सकेगा यह भी निर्णय लिया गया। सदस्य बनने वाले प्रत्येक कर्मचारी से एक सदस्यता फार्म भरवाया जाएगा। इसके लिए शीघ्र ही अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। कोटा, भरतपुर एवं उदयपुर संभाग में दायित्व देने के लिए स्थानीय सहयोगियों से संपर्क करने का दायित्व केन्द्रीय संयोजक कृष्णसिंह को दिया गया।

तनेसिंह सोढ़ा का चयन

जैसलमेर जिले के काठा गांव निवासी तनेसिंह सोढ़ा का कॉलेज शिक्षा में इतिहास के व्याख्याता के रूप में चयन हुआ है। तनेसिंह वर्तमान में राउमावि कोटड़ी जैसलमेर में इतिहास के स्कूल व्याख्याता हैं एवं जैसलमेर में संचालित हिमालय कॉम्पिटिशन एकेडमी के मानद निदेशक हैं।

हुकमसिंह पीलवा को पितृशोक

पेहपसिंह पीलवा

संघ के स्वयंसेवक हुकमसिंह पीलवा के पिता पेहपसिंह जी का विगत 12 जुलाई को 75 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। दिवगंत आत्मा की शांति की प्रार्थना के साथ शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना।

फिटनेस इंजीनियर लोकेन्द्रसिंह

जयपुर निवासी सेवानिवृत मेजर बजरंग सिंह के पुत्र लोकेन्द्रसिंह राठौड़ राजस्थान का पहला हेल्थ हब बनाने जा रहे हैं। बारहवीं तक पढ़ाई करने के बाद फिटनेस को लेकर पढ़ाई छोड़ने वाले लोकेन्द्र ने 2013 में फिटनेस चैंपियनशिप में राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया एवं तीसरे स्थान पर रहे। उसके बाद जयपुर के एक नामी जिम में ट्रेनर के रूप में कार्य शुरू किया और मैनेजर बन गए। अब वे अपने स्टार्टअप के जरिए सी स्कीम जयपुर में हेल्थ हब बनाने जा रहे हैं। पुत्र को इंजीनियर बनाने का सपना देखने वाले बजरंगसिंह इस बात से प्रसन्न हैं कि उनके पुत्र फिटनेस के इंजीनियर बन गए हैं। परम्परागत क्षेत्रों से हटकर अपने रुचि के क्षेत्र में कुछ कर दिखाने की चाह रखने वालों के लिए लोकेन्द्र अच्छे उदाहरण हैं।

(पृष्ठ एक का शेष)

संगठित...

मीडिया ने इस पक्ष को ही उजागर किया जबकि संघर्ष का नेतृत्व कर रहे संजीदा लोगों ने बार-बार स्पष्ट किया कि हमारा संघर्ष अपराधी के महिमामंडन के लिए नहीं बल्कि न्याय के संवैधानिक अधिकार की सुरक्षा हेतु है।

3. मीडिया की परम्परागत भूमिका : परम्परागत रूप से मीडिया हमारे खिलाफ ही रहता है और इस आंदोलन में तो सरकार ने मीडिया को पूरी तरह से मैनेज कर रखा था जिस कारण मीडिया में वही आया जो सरकार चाहती थी। ऐसे में मीडिया से सहयोग की बात तो दूर बल्कि मीडिया द्वारा पूरे आंदोलन की नकारात्मक छवि पेश करने की कोशिश की गई। लेकिन सोशल मीडिया ने इस कमी को पूरा किया और आंदोलन की पल-पल की सूचना से आमजन को अनगत करवाया। सोशल मीडिया का एक अन्य पक्ष भी है। जिस प्रकार हमारे कुछ लोगों ने भाषा का ओछापन दिखाया एवं अपराधी के महिमामंडन के ऑडियो-वीडियो डाले उन्होंने समाज की छवि को गंभीर नुकसान पहुंचाया। साथ ही अफवाहों का भी प्रसार हुआ।

4. पुलिस-प्रशासन की अपरिपक्वता : इस पूरे प्रकरण में पुलिस, प्रशासन एवं गृहमंत्री की कार्रवाई व वक्तव्य अपरिपक्वता की पराकाष्ठा रहे। इन कार्रवाहियों व वक्तव्यों ने आग में घी का काम किया एवं इससे आक्रोश और अधिक फैला। इन्हीं कार्यवाहियों की प्रतिक्रिया स्वरूप आंदोलनरत युवाओं द्वारा भी अपरिपक्वता दिखाई गई जिसे नियंत्रित करने के लिए संजीदा लोगों को विशेष प्रयास करने पड़े।

5. राजनीतिज्ञों की भूमिका : समाज के राजनीतिज्ञों की भूमिका सरकार और समाज के बीच सेतु की होती है। समाज यह अपेक्षा करता है कि वे सरकार में उनका पक्ष रखें और सत्ता पक्ष के राजनीतिज्ञों से यह अपेक्षा ज्यादा होती है। यहां भी ऐसी अपेक्षा होनी स्वाभाविक थी और एक-दो लोगों को छोड़ दें तो राजनीतिज्ञों ने अपनी भूमिका निभाई भी। पंचायती राज मंत्री राजेन्द्रसिंह राठौड़, विधानसभा उपाध्यक्ष राव राजेन्द्रसिंह, वरिष्ठ विधायक नरपतसिंह राजवी, रणधीरसिंह भिंडर आदि ने अपनी सीमा में रहकर सरकार और समाज के बीच सेतु बनने का गंभीर प्रयास किया। हालांकि जोशीले युवाओं द्वारा तो इन्हें निशाना ही बनाया गया एवं इन्हें हराने तक के संदेश प्रसारित किए गए जो हमारी लोकतांत्रिक अपरिपक्वता को दर्शाते हैं। समझौते के बाद सत्ता पक्ष के राजपूत विधायकों की एक बैठक का वीडियो वायरल हुआ जिसे लेकर भी इन्हें लगातार निशाना बनाया जा रहा है और मीडिया ने भी इसे नकारात्मक रूप से प्रचारित किया लेकिन यह हमारे सोचने का विषय है कि किसी अनौपचारिक निजी बातचीत के लिए क्या हमें उन्हें इस प्रकार निशाना बनाना चाहिए? साथ ही यदि वास्तविकता को स्वीकार करें तो उस वीडियो में गलत भी क्या है? क्या हमारे कुछ युवा नेताओं ने 12 जुलाई से पहले हुई सरकार से वार्ता के महत्त्व को वीडियो जारी कर कम तर घोषित नहीं किया? लेकिन हमारे में यह एक बड़ी कमी है कि हम जोश में होश को किनारे कर देते हैं और इसी का परिणाम था कि हमारे समाज के एक प्रतिष्ठित पत्रकार को हमने हमारे आक्रोश का निशाना बना डाला जबकि वे अपने चैनल के मालिकों के निर्देश के बाहर कैसे जा सकते थे। साथ ही हम इस सकारात्मकता की ओर क्यों नहीं मुड़ते कि उनके द्वारा दिखाए गए उस एपिसोड ने इस प्रकरण की आड़ में स्वयं का हित साधने को प्रयासरत लोगों को हतोत्साहित किया। विपक्षी दलों के राजनीतिज्ञों ने इस प्रकरण में अपेक्षित भूमिका अदा की। प्रतापसिंह खाचरियावास की भूमिका उल्लेखनीय रही।

6. अनियोजित सभा से हुई जन हानि : आजादी के बाद हमने अनेक आंदोलन किए लेकिन उस दौरान कोई जनहानि नहीं हुई लेकिन इस आंदोलन ने दो युवाओं की जान ले ली एवं साथ ही अनेक लोगों पर मुकदमें दर्ज हुए। इस पूरे प्रकरण को देखें तो वह सभा पूर्णतया अनियोजित सभा थी। इस सभा को कोई नियंत्रित करने वाला नहीं था। मांगे न माने जाने पर आगे क्या करना है इसकी कोई योजना नहीं थी और ऐसे में सरकारी हठधर्मिता के आगे भीड़ उग्र हुई जिससे अनहोनी घटित हुई। साथ ही आनंदपाल सिंह के परिवार ने भी हठधर्मिता ही दिखाई। समाज के अनेक वरिष्ठ लोगों के आग्रह को नकारा जिसके कारण मृतक का दाह संस्कार भी अशोभनीय परिस्थितियों में हुआ। यदि परिवार समझ से काम लेता तो मृतक के शरीर की दुर्गति होने से रोका जा सकता था।

7. आंदोलन के राजनीतिक संदेश : इस आंदोलन का राजनीतिक संदेश सुखद रहा। पहली बार ऐसा लगा कि जैसे समाज एक पार्टी विशेष की गुलामी के स्तर तक के समर्थन से मुक्त हो रहा है। सत्तारुढ़ पार्टी, जिसकी जड़ों को राजपूत समाज ने सींचा है, का व्यवहार समाज के प्रति घोर उपेक्षा का रहा जिसके परिणाम स्वरूप समाज में इस राजनीतिक पार्टी के प्रति गंभीर आक्रोश पनपा। आवश्यकता है कि इस आक्रोश को बनाए रखा जाए ताकि कोई भी राजनीतिक दल हमें मजबूर मतदाता न मानकर अपने सभी विकल्प खुले रखने वाले मजबूत मतदाता के रूप में स्वीकार कर सके। साथ ही एक विशेष राजनीतिक संदेश यह निकलकर आया कि सदियों से हमारे साथ रहा रावणा राजपूत समाज राजनीतिक दुष्चक्रों के कारण आजादी के बाद हमसे दूर छिटकता गया। लेकिन इस आंदोलन ने दोनों समाजों की दूरियों को विशेष रूप से पाटने का काम किया और वर्षों बाद दोनों समाज कंधे से कंधा मिलाकर साथ चले। आशा की जा सकती है कि यह मिलन आजादी के पूर्व तक की समझ की ओर लौटेगा।

रतनसिंह चौहान ने निभाया क्षात्रधर्म

विपदा के समय बचाने वाला क्षत्रिय होता है। ऐसी ही विपदा जालोर जिले के आकोली गांव के जोगी परिवार पर आई जो आकोल नदी में स्थित टापू पर अपने 11 सदस्यों सहित फंस गया। रतनसिंह चौहान ने गांव के अपने साथियों को रस्सी पकड़ा कर नदी में उतरकर अपने कंधे पर बिठाकर उन 11 लोगों की जान बचाई। रतनसिंह के इस साहसिक कार्य की सब ओर प्रशंसा हो रही है। होना स्वाभाविक भी है क्यों कि स्वधर्म सदैव प्रतिष्ठा प्रदान करता है। पेपसिंह भायल ने उनका पूरा सहयोग किया।

मुकनदास जी खींची की 385वीं जयंती मनाई

औरंगजेब के साथ संघर्ष में दुर्गादासजी के निकटतम सहयोगी रहे मुकनदास जी खींची की 385वीं जयंती प्रतिवर्ष की भांति जोधपुर के टाउन हॉल में 16 जुलाई को समारोहपूर्वक मनाई गई। समारोह में 21 युवाओं ने रक्तदान किया एवं प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। अजयसिंह गोगादेव को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 1000 मीटर स्केटिंग प्रतियोगिता एवं मूलसिंह खींची 500 मीटर स्केटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया। समाजसेवा के लिए मूलसिंह को एवं चिकित्सा सेवा के लिए जब्बरसिंह व हरेन्द्रसिंह को सम्मानित किया गया। पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव के मुख्य आतिथ्य एवं पूर्व नरेश गजसिंह की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में वक्ताओं ने मुकन्ददासजी के त्याग, स्वामी भक्ति एवं वीरता के बारे में बताते हुए उनकी शौर्यगाथा को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता बताई। मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष के अलावा प्रो. डूंगरसिंह खींची, करणसिंह उचियारड़ा, हणवंतसिंह आदि ने संबोधित किया।

'कुछ बंद पड़ा है तालों में'

'कुछ बंद पड़ा है तालों में, तुम याद न जग के ख्यालों में।'

कौनसी संपदा है जो जग से विलग है और हम हैं जो उससे अनभिज्ञ हैं? हमारी पहुंच तो इस संसार या जग तक ही सीमित है। हमने जो लिया यहां से लिया और जो देखा है वो भी ये संसार व्यवहार या जग व्यवहार ही देखा है और हमें मजा भी इसी में आ रहा है। परन्तु वास्तविक मस्ती इसमें नहीं है। यदि मस्ती यहां होती तो बड़े-बड़े विश्व विजेता व राजा-महाराजा इस संसार को छोड़ कर नहीं जाते। यह पंक्ति भी ऐसे ही महापुरुष द्वारा गाई गई है। हम खोज ही सांसारिक वस्तुओं की कर रहे हैं तो हमें वह बंद पड़ा हुआ कहां से मिलेगा? हमें तो पता ही नहीं है कि क्या बंद पड़ा है तालों में? हम खोये हुए हैं जग के ख्यालों में। हमें पता भी नहीं कि इसके अलावा कुछ और भी है क्या? इन ख्यालों से बाहर निकलने पर ही अगली खोज हो सकती है और खोज तब ही प्रारम्भ होगी जब चाह पैदा हो खोजने की। जब कोई बताए, समझाए कि कुछ और भी है। हमारे में वह सामर्थ्य पैदा करे देखने और समझने का। वरना हम तो सावन के अंधे की तरह हरा ही हरा देख पाते हैं। तब यदि हमें वास्तविक आंखे चाहिए तो वास्तविक आंखों वाले के पास जाना पड़ेगा जो वास्तविकता देख रहा है। वो हमें दिखा सकता है कि तालों में बंद पड़ा है, वह क्या है? वो उस तिजोरी के ताले खोल सकता है। यदि देखने की चाह पैदा हो तो बंधु चले आना उस पाठशाला में जिसको पूज्य तनसिंह जी ने 22 दिसम्बर 1946 को स्थापित किया। वह पाठशाला आज भी अपना काम उनकी इच्छा के अनुसार कर रही है और उसका नाम है श्री क्षत्रिय युवक संघ। तो बंधुओं जग के ख्यालों से थोड़ा बाहर निकलो और इधर मुड़ो। यदि मुड़ोगे और सर्वात्मना मुड़ोगे तो निश्चित रूप से वह आभास हो जाएगा जिसके लिए अनेक जन्मों तक भटकने के बाद मानव जीवन मिला है। यदि हिम्मत है तो चलके देख लो यारों।

- बाबूसिंह सरली

'संघ ईश्वरीय कार्य है'

अनेक जन्मोपरांत जन्म लेते-लेते यह दुर्लभ मनुष्य जीवन मिला है। संसार के निराले खेल मुझे मोहित करते हैं। चारो तरफ प्रेरणाओं का स्रोत हैं फिर चाहे अच्छाई की ओर प्रेरित करने वाली प्रेरणाएं हों, चाहे बुराई की ओर प्रेरित करने वाली। परन्तु दुर्भाग्य की बात यह है कि अधिकांश प्रेरणाएं बुराई की ही हैं। इस जीवन में पौधारोपण का कार्य बहुत श्रेष्ठ माना गया है। एक पौधा धीरे-धीरे जब बड़ा होता जाता है तो उसकी उपयोगिता बढ़ती जाती है। वह इस संसार को छाया, फल इत्यादि देकर अपना सेवा धर्म निभाता है। ईश्वर की दृष्टि में कितना महत्त्वपूर्ण है वह पौधा या पेड़ जो ईश्वर निर्मित इस संसार में अपना कर्तव्य निभा संपूर्ण जीवन जाति के लिए सहायक बनता है और उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है वह व्यक्ति जिसने उस पौधे का बीजारोपण कर उसे पोषित किया, उसने अपना श्रम व पसीना बहाकर उसे संचित किया। क्या ईश्वर का प्रिय उससे अधिक कोई हो सकता है? ईश्वर को एक 4 गुणा 4 की तस्वीर में जकड़ रखने वाले भले ही अपने को पंडित बता तोते की तरह उसका नाम रट यह समझते हैं कि उनसे बड़ा उसका और कोई भक्त नहीं परन्तु यह तो केवल उनका मिथ्या भ्रम ही है। तो जब एक पौधा या पेड़ लगाने वाला इतना परोपकारी सिद्ध हो सकता है तो मनुष्य रूपी पेड़ लगाने वाले के उपकार का तो कहना ही क्या? इस संसार में मनुष्य रूपी न जाने कितने पौधे हैं किन्तु फिर से दुर्भाग्य पूर्ण है कि अधिकांश कांटों भरे ही हैं जिनकी इस संसार में कोई उपयोगिता नहीं है, कोई सार्थकता नहीं है। उनकी ना छांव है और ना ही वे फल देकर किसी का पेट भरते हैं। तो प्रश्न यह उठता है कि मनुष्य रूपी उपयोगी फल लगाने से श्रेष्ठ कार्य कोई बचता है क्या इस संसार में? जो मनुष्य धीरज से अच्छाई का बीजारोपण कर उसे इस संसार के लिए उपयोगी बनाए, किसी व्यक्ति को एक ऐसा विचार देकर जो उसकी पूरी जीवन प्रणाली बदलता, श्रेष्ठ बनाता है वह कई गुणा अच्छा है धन, आदि देने से। ऐसा ही एक कार्य है - 'संसार में सेवा धर्म निभा इंसीनियत को बढ़ा, अपना ऋण चुकाना'। यह कार्य किया है पूज्य श्री तनसिंह जी। हजारों अनुयायों के मन में इंसानियत का दीप जला एक अमर ज्योत दे गए पूज्य श्री तनसिंह जी और उसी अमर ज्योत का नाम है श्री क्षत्रिय युवक संघ। संसार में मनुष्य रूपी पौधे लगाने का काम करता है श्री क्षत्रिय युवक संघ। अपने प्रेम की छांव से और सेवा के फलों से इस संसार का पोषण करता है। यह एक आदर्श स्थिति है जब पेड़ पूर्ण रूप से विकसित हो जाता है। परन्तु अभी हजारों पौधे हैं जो भविष्य में जरूर पेड़ बन मानवता की रक्षा और पोषण करेंगे। क्या ईश्वर का प्रिय ऐसे सेवा रूपी पेड़ और पेड़ का बीजारोपण करने वाले के सिवाय कोई दूजा हो सकता है? इसीलिए ही तो कहा जाता है बन्धुवर कि 'संघ ईश्वरीय कार्य है'

- हर्षवर्धन सिंह रेड़ा

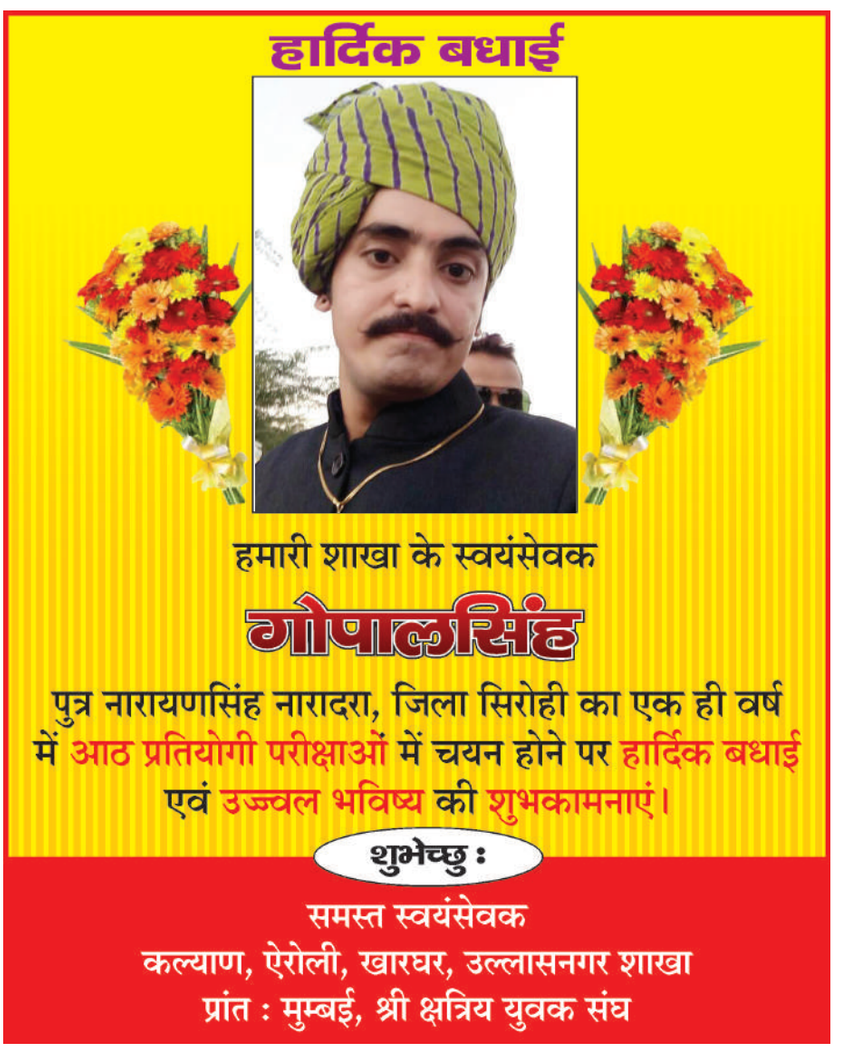

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org